The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 4 | April 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

भारतीय भाषाएं और ज्ञान परंपरा का ऐतिहासिक परिपेक्ष्य

सर्वेश चतुर्वेदी

असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, हिंदू कॉलेज, मुरादाबाद।

डॉ. राजेश कुमार *

असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, हिंदू कॉलेज, मुरादाबाद

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.20127108

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 25-04-2026

Published: 10-05-2026

Keywords:

ज्ञान, परंपरा, ऐतिहासिक भाषायें

ABSTRACT

भारत विविधताओ का देश है जहां भाषाई सांस्कृतिक और बौद्धिक परंपराओं का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। भारतीय भाषायें केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं है बल्कि वे ज्ञान, संस्कृति, परंपरा और दर्शन की वाहक भी है। भारत में प्राचीनकाल से ही ज्ञान के संरक्षण, संवर्धन और प्रसार में भाषाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वैदिक संस्कृत से प्रारंभ होकर पाली, प्राकृत, अपभ्रंश और आधुनिक भाषाओं जैसे हिंदी, तमिल, बंगाली तक इनका योगदान भारतीय ज्ञान परंपरा को आकार देने में महत्वपूर्ण रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा को केवल शास्त्रीय ग्रंथों तक सीमित न मानकर एक गतिशील प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है जहाँ भाषाएं सेतु का कार्य करती है। संस्कृत ने वेद, उपनिषद और पुराणों के माध्यम से दार्शनिक आधार प्रदान किया जबकि द्रविड़ भाषाएँ जैसे तमिल ने संगम साहित्य के जरिए सामाजिक और आर्थिक ज्ञान को संरक्षित किया। मध्यकाल में हिन्दी, उर्दू और बंगाली ने भारतीय और सूफ़ी परम्पराओं को लोकप्रिय बनाया। भारतीय ज्ञान परंपरा का विकास वेदों, उपनिषदों, पुराणों, महाकाव्यों, तंत्र ग्रंथों, शास्त्रों और लोक परंपराओं के माध्यम से हुआ हैं। यह परंपरा केवल धार्मिक या आध्यात्मिक नहीं बल्कि विज्ञान, गणित और खगोलशास्त्र, चिकित्सा, व्याकरण, दर्शन, साहित्य और कला के क्षेत्रों में भी अत्यंत समृद्ध रही हैं। इस शोध पत्र में

*Corresponding Author

भारतीय भाषाओं और ज्ञान परंपरा के ऐतिहासिक विकास, उनके परस्पर संबंध तथा उनके सामाजिक सांस्कृतिक महत्त्व का विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तावना -

भारतीय सभ्यता विश्व की प्राचीनतम जीवन्त सभ्यताओं में से एक है, जिसका आधार उसकी भाषाएं और ज्ञान परंपरा रहीं हैं। भारतीय मनीषा ने सदैव विद्या को मुक्ति का साधन माना है सा विद्या या विमुक्तये। इस विद्या के प्रसार का मुख्य माध्यम भारत की विविध भाषाएं रही हैं। संस्कृत की शास्त्रीयता से लेकर पाली, प्राकृत, अपभ्रंश और आधुनिक भारतीय भाषाओं तक का सफ़र केवल व्याकरणिक विकास नहीं बल्कि वैचारिक क्रांति का इतिहास है।सिंधु घाटी सभ्यता की अनसुलझी लिपि से लेकर वेदों उदत्त संस्कृत और जनमानस की बोलियों तक भारत का भाषाई परिदृश्य अत्यंत सघन और अन्तरसम्बंधित रहा है।भारतीय ज्ञान परंपरा की सबसे बड़ी विशेषता इसकी मौखिक परंपरा रही है । लिखित लिपि के व्यापक प्रचलन से पहले हजारों वर्षों तक वेदों और शास्त्रों को कंठस्थ कर सुरक्षित रखा गया । प्राचीन भारत की सभ्यता और संस्कृति की आत्मा उसकी भाषा और ज्ञान परंपरा में निहित है। भारतीय चिंतन में भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं बल्कि ज्ञान का आधार और साध्य दोनों रही है।'वाक' को वेदों में सृजन का मूल तत्व माना गया है, और यह विचार आगे चलकर दार्शनिक,व्याकरणिक और सांस्कृतिक विमर्श का केंद्र बन गया।भाषा न केवल ज्ञान का माध्यम थी बल्कि स्वयं ज्ञान का रूप भी मानी गई।वैदिक ऋषियों से लेकर दार्शनिक आचार्यों तक सभी ने वाणी को चेतना और सृष्टि के केंद्र में स्थापित किया। भारत की ज्ञान परंपरा हमें यह सिखाती है कि भाषा का सम्मान ही ज्ञान का सम्मान है।

अध्ययन के उद्देश्य-

इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है-

(1)भारतीय भाषाओं के ऐतिहासिक विकास का अध्ययन करना।

(2)भाषा और ज्ञान परंपरा के परस्पर संबंध का अध्ययन करना।

(3)भारतीय ज्ञान परंपरा की विशिष्टताओं को समझना।

(4)ज्ञान के स्वरूप में आए परिवर्तनों का अध्ययन

(5)भारतीय भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन की आवश्यकताओं को समझना।

अध्ययन की विधि-

इस शोध में मुख्यतः ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक विधि का उपयोग किया गया है।विभिन्न प्राचीन ग्रंथों,अभिलेखों,पांडुलिपियों तथा आधुनिक शोध कार्यों का अध्ययन किया गया है।प्राथमिक और द्वितीयक स्रोत का प्रयोग किया गया है।

भारतीय भाषाओं का ऐतिहासिक विकास-

भारतीय ज्ञान परंपरा का आरंभ वैदिक काल से माना जाता है इस काल में संस्कृत भाषा ज्ञान का प्रमुख माध्यम थी। वेदों में सामाजिक, धार्मिक एवं वैज्ञानिक ज्ञान निहित है । उपनिषदों में दार्शनिक चिंतन, आत्मा और ब्रह्म की अवधारणा का विस्तार हुआ । पाणिनि द्वारा रचित अष्टाध्यायी ने व्याकरण को वैज्ञानिक रुप दिया जिससे संस्कृत पूर्ण वैज्ञानिक भाषा बनी। बौद्ध धर्म व जैन धर्म के समय ज्ञान के प्रसार के लिए जन भाषाओं का प्रयोग बढ़ा। पाली और प्राकृत भाषा में बौद्ध व जैन साहित्य की रचना हुई ।इससे ज्ञान का जनतंत्रीकरण हुआ और वह आम जन तक पहुंचा। समय के साथ प्राकृत से अपभ्रंश भाषाओं का विकास हुआ, जिनसे आधुनिक भारतीय भाषाएँ विकसित हुई। हिंदी, बंगाली, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं का विकास हुआ। दक्षिण में संगम साहित्य के माध्यम से तमिल भाषा अपने सर्वोच्चता पर थीं।मध्यकाल में भक्ति आंदोलन ने भारतीय भाषाओं को और अधिक सशक्त किया।क्षेत्रीय भाषाओं में संत कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से ज्ञान, भक्ति और सामाजिक सुधार का संदेश दिया । इस काल में भाषा और ज्ञान का संबंध और अधिक सजीव व जनोन्मुख हुआ।फारसी और अरबी के प्रभाव से उर्दू जैसी समन्वयवादी भाषा का जन्म हुआ। कबीर,सूरदास,नानक, तुकाराम व मीराबाई आदि संतों ने सरल भाषा में गुढ़ आध्यात्मिक और दार्शनिक विचार प्रस्तुत किया।

औपनिवेशिक काल में अंग्रेजी भाषा के प्रभाव ने भारतीय भाषाओं और ज्ञान परम्परा को नयी चुनौतियां दी । अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली के कारण भारतीय भाषाओं और ज्ञान परंपरा को गहरा आघात पहुंचा, लेकिन इसी काल में भारतीय पुनर्जागरण भी हुआ, जिसने भारतीय भाषाओं और सांस्कृतिक मूल्यों को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया ।इस काल में आधुनिक भाषाओं का विकास हुआ और उन्होंने साहित्य,पत्रकारिता और शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वतंत्रता आंदोलन में भी प्रमुख भूमिका रही है।राष्ट्रीय जागरण में भाषा प्रमुख माध्यम बनी। स्वतंत्रता बाद भारतीय संविधान ने भाषाई विविधता को मान्यता दी और विभिन्न भारतीय भाषाओं को संरक्षित और विकसित करने के लिए प्रयास किए गए। वर्तमान विश्वीकरण और डिजिटल युग के प्रभाव के बाद भी भारतीय भाषाएं अपनी पहचान बनाए हुए है और ज्ञान के प्रसार मे महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषताये -

भारतीय ज्ञान परंपरा जीवन के सभी पहलुओं जैसे - धर्म, दर्शन, विज्ञान, कला व चिकित्सा आदि को समाहित करती हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा की सबसे बड़ी विशेषता इसकी मौखिक परम्परा रही हैं। प्राचीन काल मे ज्ञान का प्रसार मौखिक रूप से हुआ जिसे श्रुति और स्मृति परंपरा कहा जाता हैं। ज्ञान का हस्तांतरण केवल सूचना का आदान प्रदान नहीं बल्कि एंव जीवंत संस्कार था।

भारतीय ज्ञान व्यवस्था समाज के नैतिक,आध्यात्मिक और बौद्धिक आधार का निर्माण करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा ने मानव जीवन, आचार, विज्ञान और आध्यात्मिकता को अनोखे ढंग से विकसित किया है ।

भारत में विभिन्न भाषाओं का सह अस्तित्व ज्ञान के विविध रूपों को जन्म देता है। भारतीय ज्ञान परंपरा में अनुभव जन्य वैज्ञानिक ज्ञान मानव जीवन के प्रत्येक पहलू में दिखाई देती हैं।चिकित्सा, योग,आयुर्वेद, वास्तुकला एवं पर्यावरण के संदर्भ में इसे देखा जा सकता है। यह परंपरा विभिन्न भाषाओं ,संस्कृतियों, पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों एवं कृषि पद्धतियों आदि को सम्मान देती है । जो इसकी विविधता और बहुलता को प्रदर्शित करती है।

भाषा और ज्ञान परंपरा का परस्पर संबंध -

भाषा के बिना ज्ञान का अस्तित्व नहीं संस्कृत केवल भाषा नहीं ,बल्कि एक संपूर्ण ज्ञान तंत्र हैं । संस्कृत भाषा ने ज्ञान परंपरा को एक व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया। वेद, उपनिषदों और षडदर्शन की रचना इसी में हुई है। जिसमें जीवन, ब्रहमांड और आत्मा के गूढ़ प्रश्नों पर विचार किया गया है। षड्दर्शन की सूक्ष्म अवधारणाएं संस्कृत की पारिभाषिक शब्दावली के बिना संभव नहीं थी।पाली और प्राकृत से भारतीय ज्ञान परंपरा का लोकतत्रीकरण हुआ।पाली साहित्य में तिपिटक के माध्यम से मनोविज्ञान और आचारशास्त्र का गहन चिंतन किया गया । प्राकृत और अपभ्रंश ने व्यापार, गणित और तर्क शास्त्र के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया यही अपभ्रंश आगे चलकर भारतीय भाषाओं (हिंदी, मराठी, बंगाली) की जननी बनी। दक्षिण में संगम साहित्य के माध्यम से तमिल अपने उच्चतम शिखर पर थी। अपभ्रंश और क्षेत्रीय भाषाओं ने ज्ञान और साहित्य का प्रसार किया।मध्यकाल में भाषा और ज्ञान का व्यापक प्रसार हुआ। आधुनिक काल में भारतीय भाषाओं ने सामाजिक और राजनीतिक चेतना के विकास में योगदान दिया। भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में स्थानीय भाषाओं के संदर्भ में उनके योगदान को समझा जा सकता है। भारतीय ज्ञान परंपरा विभिन्न कालों में विभिन्न भाषाओं के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होती रही है। प्रारंभ में मौखिक परंपरा के माध्यम से फिर लिखित लिपि के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा

जो वेदो, दर्शन, उपनिषद और साहित्य में हैं निरंतर प्रचलित रही। भाषा संस्कृति पहचान का आधार रही है। भारतीय भाषाओं ने भारतीय ज्ञान परंपरा के केवल धार्मिक या आध्यात्मिक नहीं बल्कि इसके विज्ञान, गणित चिकित्सा ,खगोलशास्त्र,अर्थशास्त्र,राजनीति एवं वास्तुकला परम्पराओं के ज्ञान को संरचना और अभिव्यक्ति दी।संस्कृत में जहाँ शास्त्रीय ज्ञान को संरक्षित किया वहीं लोकभाषाओं ने उसे जन जन तक पहुंचाया।

समकालीन संदर्भ में महत्त्व-

आज संपूर्ण विश्व भारतीय ज्ञान परंपरा की ओर आकर्षित हो रहा है। योग और ध्यान का वैश्विक प्रसार ,आयुर्वेद की बढ़ती लोकप्रियता और भारतीय अध्यात्म और दर्शन में बढ़ती रुचि यह सब भारतीय भाषाओं में निहित ज्ञान के कारण संभव हुआ है । भारतीय भाषाओं में ई लर्निंग, ऑनलाइन कोर्स और शोध सामग्री उपलब्ध हो रही है ।आज के वैश्वीकरण और डिजिटल युग में भारतीय भाषाओं और ज्ञान परंपरा का महत्त्व और बढ़ गया हैं।अंग्रेजी का बढ़ता प्रभाव, स्थानीय भाषाओं तथा ज्ञान पारंपरिक ज्ञान का लुप्त होना तथा तकनीकी क्षेत्र में भाषाई बाधाएं आदि चुनौतियों का सामना वर्तमान में भारतीय भाषाओं व ज्ञान परंपरा को करना पड़ रहा है।मातृभाषा आधारित शिक्षा, अनुवाद और अनुसंधान के माध्यम से तथा डिजिटल माध्यमों में भाषाओं का उपयोग के माध्यम से भारतीय भाषाओं और ज्ञान परंपरा को संरक्षित रख सकते हैं ।पांडुलिपि भारत की बौद्धिक और सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक है। यह विभिन्न भाषाओं, विभिन्न लिपियों तथा विविध विषयों पर आधारित हैं ।इनकी भाषाई और विषयगत विविधता देश की सांस्कृतिक विविधता का परिचय देती है। जब भारत अपनी पांडुलीपियो को आधुनिक तकनीक, विश्विक साझेदारी और शिक्षा समाज से जोड़ेगा तब यह केवल अपनी सांस्कृतिक पहचान को ही नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता को दिशा देने वाला बन कर पुनः प्रतिष्ठित होगा। भारतीय भाषाएं केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वे भविष्य के विकास की पूंजी भी है।

निष्कर्ष-

भारतीय भाषाएँ केवल संचार का माध्यम नहीं वे सांस्कृतिक स्मृति की वाहक है जिसमें योग, आयुर्वेद, दर्शन और विज्ञान का अथाह भंडार समाहित है।भाषा के लुप्त होने का अर्थ उस ज्ञान परंपरा को खोना है।भारतीय भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन केवल भाषाई प्रेम नहीं बल्कि वैश्विक मानवता के बौद्धिक विकास के लिए आवश्यक है।भारतीय भाषाएं और ज्ञान परंपरा एक दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक भाषाओं ने ज्ञान के संरक्षण और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जहां संस्कृत ने उच्चज्ञान को संरक्षित किया, वहीं प्राकृत, पाली और क्षेत्रीय भाषाओं ने उसे

जनसाधारण तक पहुंचाया ।आधुनिक युग में भी भारतीय भाषाएं शिक्षा, शोध और सांस्कृतिक संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। आवश्यक है कि हम अपनी भाषाओं और ज्ञान परंपरा को संरक्षित करे उन्हें आधुनिक तकनीक से जोड़ें और आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाए तभी भारत अपनी बौद्धिक और सांस्कृतिक पहचान को बनाए रख सकेगा। इतिहास के विभिन्न चरणों में भाषाओं ने ज्ञान को समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुंचाने का कार्य किया है ।वर्तमान समय में आवश्यकता है कि भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहित किया जाए ताकि भारतीय ज्ञान परंपरा की निरंतरता बनी रहे।

संदर्भ-

(1)मैकडोनेल, ए.ए.(1900), ए हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिट्रेचर, न्यूयॉर्क, डी. एपलटन एंड कंपनी।

(2)डेवी, जी.ए.(2024), इंडिया, ए लिंग्विस्टिक सिविलाइजेशन, नई दिल्ली, अल्फा book कंपनी।

(3) कपूर,प्रो. कपिल(2025), भारतीय ज्ञान परंपरा का नरन्तये, नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन।

(4) मिश्रा, बी.(2021) इंडियन नॉलेज सिस्टम: कसेचुअल ओवर व्यू, नई दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट।

(5) मैक्समूलर, एफ.(1900), सैकड़ बुक्स आफ द ईस्ट, ऑक्सफ़ोर्ड, द क्लर्डन प्रेस।

(6) तिवारी, डॉ.भोलानाथ(2019),हिंदी भाषा का इतिहास, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन।

(7) द्विवेदी, हजारी प्रसाद(1940) हिंदी साहित्य की भूमिका, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।

(8) दासगुता, एस.न.(1922), हिस्ट्री ऑफ इंडियन फिलॉस्फी, कैंब्रिज, यूनिवर्सिटी प्रेस।

(9) चतुर्वेदी, रामस्वरूप (1994), हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।